यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्।।२७।।

यत्=जो; **करोषि**=(तू) करता है; **यत्**=जो भी; **अश्नासि**=खाता है; **यत्**=जो कुछ; **जुहोषि**=हवन करता है; **ददासि**=दान देता है; **यत्**=जो; **यत्**=जो; **तपस्यसि**=तप करता है; **कौन्तेय**=हे कुन्तीपुत्र; **तत्**=वह सब; **कुरुष्व**=कर; **मत्**=मेरे; **अर्पणम्**=अर्पण।

अनुवाद

इसलिए हे कुन्तीपुत्र! तू जो कुछ कर्म करता है, जो कुछ हवन करता है, जो कुछ दान करता है और जो तपस्या करता है, वह सब मेरे अर्पण कर।।२७।।

तात्पर्य

सारांश में मनुष्य का यह प्रधान कर्तव्य है कि वह अपने जीवन को इस प्रकार ढाल ले कि किसी भी परिस्थिति में श्रीकृष्ण की विस्मृति न हो। प्राणधारण के लिए कर्म करना सब के लिए आवश्यक है, अतएव श्रीकृष्ण यहाँ आदेश दे रहे हैं कि उन्हीं के लिए सारे कर्म करे। जीवन-धारण के लिए भोजन करना पड़ेगा; अतएव श्रीकृष्ण का प्रसाद ही खाय। सभ्य मनुष्य के लिए कुछ धार्मिक कर्मकाण्ड आवश्यक हैं, अतः श्रीकृष्ण की आज्ञा है, 'यह सब मेरे अर्पण कर।' इसका नाम 'अर्चन' है। दान देने की प्रवृत्ति सब में रहती है; श्रीकृष्ण कहते हैं, 'धन का दान मुझे कर।' इसका तात्पर्य है कि सारे संचित धन का सदुपयोग कृष्णभावना आन्दोलन को अधिकाधिक प्रसारित करने में ही करना चाहिए। आजकल ध्यानयोग की पद्धति में लोगों की अभिरुचि अधिक हो रही है; पर इस युग में यह व्यावहारिक नहीं है। परन्तु जो पुरुष जपमाला पर **हरेकृष्ण** महामन्त्र का जप करते हुए चौबीस घण्टे श्रीकृष्ण के ध्यान में निमग्न रहने का अभ्यास करता है, वह निश्चित रूप से परम योगी है, जैसा छठे अध्याय में प्रमाण है।

शुभाशुभफलैरेवं मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः।
संन्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि।।२८।।

शुभ=शुभ; **अशुभ**=अशुभ; **फलैः**=फलों से; **एवम्**=इस प्रकार; **मोक्ष्यसे**=मुक्त हो जायगा; **कर्मबन्धनैः**=बन्धन से; **संन्यास**=संन्यास (त्याग) के; **योग**=योग से; **युक्तात्मा**=युक्त मन वाला; **विमुक्तः**=मुक्त हुआ; **माम्**=मुझे (ही); **उपैष्यसि**=प्राप्त होगा।

अनुवाद

इस प्रकार तू सम्पूर्ण शुभ-अशुभ कर्मफलों से छूट जायगा और फिर इस संन्यासयोग से युक्त चित्तवाला मुक्त होकर मुझको ही प्राप्त होगा।।२८।।

तात्पर्य

आचार्य के आश्रय में कृष्णभावनाभावित कर्म करने के परायण मनुष्य को